بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-27.10.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

बदर की लड़ाई के संदर्भ में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन के कुछ आयामों का बयान, बनू क़ैनक़ाअ के युद्ध का विवरण और इस्राईल हम्मास युद्ध के कारण दुआ की पुनः प्रेरणा।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 27 अक्तूबर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत का वर्णन हो रहा था। रिवायतों में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपनी बेटी तथा दामाद को तहज्जुद की नमाज़ की ओर ध्यान दिलाने का बुख़ारी में यूँ वर्णन है कि हज़रत अली रज़ी. बयान करते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके तथा हज़रत फ़ातमा रज़ीयल्लाहु तआला अन्हा के घर पधारे तथा पूछा कि क्या तुम लोग नमाज़ (तहज्जुद) नहीं पढ़ते? तो इस पर हज़रत अली रज़ी. ने उत्तर दिया कि हमारी जान अल्लाह के हाथ में है जब वह चाहता है तो हमें उठाता है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई जवाब न दिया और वापस तशरीफ़ ले गए और वापस जाते हुए फ़रमा रहे थे कि इंसान सबसे बढ़ कर वाद-विवाद करने वाला है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु इस घटना का वर्णन करके फ़रमाते हैं कि एक अवसर पर जब हज़रत अली रज़ीयल्लाहु अन्हु ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ऐसा उत्तर दिया जिसमें वाद-विवाद तथा विराध को झलक पाइ जाती थी, तो बजाए इसके कि आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नाराज़ होते अथवा अप्रसन्नता प्रकट करते, आप स. ने ऐसा सूक्ष्म उपाय किया कि हज़रत अली रज़ी. सम्भवतः अपनी आयु के अन्तिम छार तक इस दयालुता से आनन्दित होते रहे होंगे। उन्होंने जो आनन्द लिया होगा वह तो उन्हीं का सौभाग्य था, अब भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस अप्रसन्नता की अभिव्यक्ति पर विचार करके हर एक सूक्ष्म दृष्टि रखने वाला चकित रह जाता है। फ़रमाया- वास्तव में

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इतना कह देना अपने अन्दर ऐसे ऐसे लाभ रखता था कि उसका दसवाँ भाग भी किसी अन्य व्यक्ति की सौ बातों से नहीं पहुंच सकता।

फ़रमाया कि इस हदीस से हमें अनेक बातों का ज्ञान होता है जिनसे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नैतिक आचरण के विभिन्न आयामों पर रौशनी पड़ती है तथा इसी स्थान पर उनका वर्णन कर देना उचित लगता है।

पहली बात तो यह पता चलती है कि आप स. को दीनदारी का कितना ध्यान रहता था कि रात के समय फिर फिर कर अपने निकटवर्तियों का ध्यान रखते थे। अनेक लोग होते हैं जो स्वयं तो नेक होते हैं, लोगों को भी नेकी की शिक्षा देते हैं किन्तु उनके घर का हाल ख़राब होता है। अपने सम्बंधियों की शिक्षा दीक्षा एक ऐसा उच्च कोटि का गुण है जो यदि आप स. में न होता तो आपके नैतिक आचरण में एक बहुमूल्य चीज़ की कमी रह जाती परन्तु आप क्यूँकि उच्चतम नैतिकता पर स्थापित थे इस लिए यह गुण भी आप में अत्यधिक था।

दूसरी बात यह पता चलती है कि आप स. को उस शिक्षा पर सम्पूर्ण विश्वास था जो आप स. दुनिया के सामने पेश करते थे। आधी रात के समय उठ कर आप स. का जाना तथा अपनी बेटी एवं दामाद को प्ररणा देना कि वे भी तहज्जुद अदा किया करें, उस सम्पूर्ण विश्वास का प्रमाण है जो आप स. को उस शिक्षा पर था जिस पर आप स. लोगों को चलाना चाहते थे अन्यथा एक झूठा आदमी जो जानता हो कि एक शिक्षा पर चलना अथवा न चलना एक समान है, अपनी संतान को ऐसे गुप्त समय पर इस शिक्षानुसार चलने का उपदेश नहीं दे सकता।

तीसरी बात वही है जिसको साबित करने के लिए यह घटना बयान की गई है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर एक बात को समझाने के लिए सहजता से काम लिया करते थे तथा बजाए लड़ने के, प्यार और मुहब्बत से किसी को उसकी ग़लती पर सूचित फ़रमाते थे। अतः हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हु फ़रमाते हैं कि मैंने फिर कभी तहज्जुद नहीं छोड़ी।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि यह घटना हमें तहज्जुद की अदायगी के हवाले से याद रखना चाहिए तथा विशेषतः मुरब्बी एवं वाक़िफ़े ज़िन्दगी तथा ओहदेदारों को इस ओर ध्यान देना चाहिए। रातों की दुआएँ ही हैं जो अल्लाह तआला की कृपाओं को अधिक खींचती हैं तथा आजकल तो दुनिया को विनाश से बचाने के लिए इनकी अधिक आवश्यकता है।

इसके बाद घटनाआं में बनू क़ैनक़ाअ के युद्ध का वर्णन आता है। यह लड़ाई दो हिजरी में हुई। जब इस्लाम के आगमन से औस तथा ख़िज़रज नामक दोनों क़बीले पुरानी शत्रुता को पीछे छोड़ कर एक हो गए तो यह यहूदियों को अच्छा नहीं लगा तथा यहूदियों ने विभिन्न षड्यन्त्रों के द्वारा उन्हें दोबारा एक दूसरे के विरुद्ध प्रेरित करने का प्रयास किया। ऐसे ही एक अवसर पर औस एवं ख़िज़रज के लोगों में वाद-विवाद इतना अधिक बढ़ा कि उसके परिणाम में युद्ध की तय्यारी शुरु हो गई। बदर की लड़ाई में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को विजय प्रदान की तो यहूदियों का विद्रोह खुल कर सामने आ गया। यहूदियों में से सबसे पहले

जिस क़बीले ने समझौते को तोड़ा, वे बनू क़ैनक़ाअ थे। बनू क़ैनक़ाअ के उपद्रव के संदर्भ में एक घटना यह भी मिलती है कि एक मुस्लिम महिला एक बार बनू क़ैनक़ाअ के बाज़ार में गई तो वहाँ कुछ दुष्ट लोगों ने उसे तंग किया तथा ऐसी गन्दी हरकत की, कि वह निर्दोष युवती वस्त्रहीन हो गई। पास ही एक मुसलमान व्यक्ति जा रहा था, जब उसने यह दृश्य देखा तो उसने हमला करके एक दुष्ट यहूदी की हत्या कर दी। इस पर अन्य यहूदी उस मुसलमान पर टूट पड़े तथा उसका वध कर दिया। जब यह सूचना आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंची तो आप स. न यहूदियों को समझाने का बड़ा प्रयास किया, परन्तु बजाए समझने के उन्होंने मुसलमानों को खुली धमकी देनी शुरु कर दी। इसके बाद यहूदी वहाँ से जाकर क़िले में बन्द हो गए और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी ओर रवाना हो गए। बनू क़ैनक़ाअ का पन्द्रह दिन तक घेराव किया गया। इस घेराव से तंग आकर यहूदियों ने मदीने से देश निकाला होकर सदैव के लिए चले जाने का निवेदन किया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यहूदियों की यह बात स्वीकार कर ली तथा बनू क़नक़ाअ को मदीने से चले जाने का आदेश दिया।

बनूक़ैनक़ाअ के युद्ध के इतिहास में कुछ मतभेद है। वाक़दी तथा इब्ने सअद ने शव्वाल दो हिजरी बयान किया है। इब्ने इसहाक़ तथा इब्ने हिश्शाम ने इसे सुवेक़ नामक युद्ध के बाद रखा है जिस पर ज़िलहिज्जह दो हिजरी के आरम्भ में होने पर सहमति है और हदीस की एक रिवायत में भी यह संकेत मिलता है कि बनू क़नक़ाअ का युद्ध हज़रत फ़ातमा रज़ी. की विदाई के बाद हुआ था।

ख़ुत्बः के अन्त में यह सिलसिला जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनिया के वर्तमान हालात के हवाले से एक बार फिर दुआ की प्रेरणा देते हुए फ़रमाया कि हम्मास और इस्राईल क युद्ध तथा इसके परिणाम स्वरूप महिलाओं, बच्चों तथा निर्दोष फ़लिस्तीनियों की शहादतें बढ़ती जा रही हैं। युद्ध की स्थिति जिस तेज़ी से बढ़ती चली जा रही है तथा इस्राईलो शासन एवं बड़ी शक्तियाँ जिस पॉलीसी के अनुसार चल रही हैं उससे विश्व युद्ध अब सामने दिखाई दे रहा है। कुछ इस्लामी देशों के प्रमुख, रूस, चीन तथा कुछ पश्चिमी विश्लेषण करने वालों ने भी अब तो यह खुल कर कहना तथा लिखना शुरु कर दिया है कि इस युद्ध की परिधि में अब विस्तार होता नज़र आ रहा है और यदि तुरन्त युद्ध विराम की पॉलीसी न अपनाई गई तो विश्व का विनाश है। सब कुछ समाचारों के माध्यम से आ रहा है, आप सबके सामने पूरी स्थिति है इस लिए अहमदियों को दुआओं की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। RELAX न हो जाएँ, हर नमाज़ में एक सजदा अथवा कम से कम किसी एक नमाज़ में एक सजदा तो अवश्य इसके लिए अदा करना चाहिए, उसमें दुआ करनी चाहिए। पश्चिमी देश का, चाहे किसी भी देश का मुख्या हो वह, इस विपत्ति पर न्याय से काम नहीं लेना चाहता। अहमदी इन वाद-विवादों में न पड़ें कि किस देश का मुख्या अच्छा है अथवा अच्छा नहीं है। जब कोई साहस के साथ युद्ध विराम की चेष्टा नहीं करता तो वह दुनिया को विनाश की ओर ले जाने का उत्तरदायी है। अतः अपने माहौल में दुआओं के साथ इस बात को फैलाने का प्रयास करें कि अत्याचार को रोको, यदि किसी अहमदी के किसी के साथ सम्बंध हैं तो उन्हें समझाएँ।

इस्राईलो कहते हैं कि हम्मास ने हमारे निर्दोष लागा को मारा है इस लिए हम इसका बदला लेंगे, परन्तु यह बदला अब सारी सीमाएँ पार कर गया है। इसराईली जानों की जितनी हानि बयान की जाती है उसके मुक़ाबले उससे चार पाँच गुना अधिक फ़लिस्तीनी निर्दोष हताहत हो चुके हैं। यदि हम्मास को मिटाने का टारगेट है तो उनके साथ आमने सामने का युद्ध करें, महिलाओं तथा बच्चों को क्यूँ निशाना बना रहे हैं। इसी तरह पानी, ख़ुराक तथा इलाज से भी वंचित कर रखा है। मानवाधिकार तथा युद्ध के नियमों के इन शासनों के सारे दावे यहां आकर समाप्त हो जाते हैं। हाँ, कुछ लोग इस ओर ध्यान दिलाते हैं, जैसे अमरीका के पूर्व सदर बराक ओबामा ने पिछले दिनों कहा था कि यदि युद्ध करना है तो युद्ध के नियमों को सामने रखना चाहिए, निर्दोष नगर वासियों पर अत्याचार नहीं होना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र संघ के सैक्रेट्री जनरल भी बोले थे। इस पर इसराईल देश ने शोर मचा दिया, तो विश्व शक्तियों के मुख्या जो स्वयं का शांति का बड़ा चैम्पियन समझते हैं वे संयुक्त राष्ट्र संघ के समर्थन में कुछ नहीं बोले, बल्कि अप्रसन्नता अभिव्यक्त की। अतएव परिस्थितियाँ बड़ी जटिल हैं तथा और अधिक जटिल होतो जा रहो हैं।

पश्चिमी मीडिया एक ओर के बढ़ा चढ़ा कर समाचार देता है तथा दूसरी ओर के एक कोने में छोटी सी ख़बर देता है। उदाहरणतः पिछले दिनों रिहाई पाने वाली एक महिला ने कहा कि मुझसे क़ैद में अच्छा व्यवहार हुआ, तो उसकी ख़बर तो एक कोने में चली गई, परन्तु जो यह बयान था कि हम्मास की क़ैद एक नर्क थी, उसे निन्तर बड़ो ख़बर बनाकर पेश किया जाता है। न्याय संगत तो यह है कि पूरी स्थिति सामने रखी जाए और फिर दुनिया को अपना फैसला करने दिया जाए। अतः इस अवस्था में हमें दुआओं की ओर अत्यधिक ज़ोर देना चाहिए।

अपनी सीमाओं में रह कर दुआ के साथ कोशिश भी करनी चाहिए। मुसलमान पीड़ितों के लिए दुआ करें तथा मुस्लिम देशों की ओर से एक सुदृढ़ एवं दीर्धकालीन योजना बनाए जाने के लिए भी दुआ करें। मुसलमानों के कष्टों के निवारण के लिए हमें एक विशेष दर्द की अनुभूति होनी चाहिए। हम तो उस मसीह मौऊद के मानने वाले हैं कि बावजूद इसके कि हमें उनसे कष्ट पहुंचते रहते हैं, आप अपने फ़ारसी शअर में अपनो भावनाओं को इस प्रकार व्यक्त करते हैं कि ऐ दिल, तू उन लोगों का लिहाज़ रख, आख़िर वे मेरे पैग़म्बर की मुहब्बत का दावा करते हैं। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का तक़ाज़ा है कि हम मुसलमानों के लिए विशेष रूप स दुआ करें। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ दे, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131